मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

व्याख्यान सूची

बी.ए. तृतीय वर्ष

(2020-2021)

क. मध्यकालीन इतिहास

ख. आधुनिक इतिहास

बी0ए0 तृतीय भाग (क्रमशः)

मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास

<u>व्याख्यान सूची</u>

आवश्यक सूचना : प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्रश्नपत्रों में प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न एवं कुल दस प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न एवं कुल पाँच प्रश्न करने होंगे।

प्रथम प्रश्नपत्र : आधुनिक विश्व (1789-1950)

(यह प्रश्नपत्र मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास के विद्यार्थियों के लिए समान है।)

इकाई 1 : यूरोप में क्रान्ति एवम् प्रतिक्रिया का युग (1789-1830)

1. 1789 में विश्व की परिस्थिति का सिंहवालोकन; फ्रान्स की क्रान्ति पृष्ठभूमि; क्रान्ति का प्रारम्भ तथा राष्ट्रीय सभा का कृतित्व।

2. नेपोलियन का उदय तथा उसके द्वारा फ्रान्स का पुनर्गठन।

3. नेपोलियन के अधीन फ्रांस का विस्तार तथा उसकी साम्राज्यीय नीति; उसके साम्राज्य के विघटन के कारक; क्रान्ति तथा नेपोलियन-युग का महत्व।

4. वियना महासम्मेलन तथा वियना की व्यवस्था; यूरोप की संयुक्त व्यवस्था तथा मेटरनिख व्यवस्था के उद्देश्य एवम् कार्य।

5. यूरोप में राष्ट्रवाद एवम् उदारवाद का उदय तथा 1830 की क्रान्तियाँ।

इकाई 2 : यूरोप में उदारवाद एवम् राष्ट्रवाद तथा नव-साम्राज्यवाद (1830-1914)

1. यूरोप में साम्राज्यवादी विचारों एवम् आन्दोलनों का उदय व प्रसार; 1848 की क्रान्तियों के स्रोत, पृष्ठभूमि, एवम् प्रभाव।

2. इटली के एकीकरण के चरण तथा मात्सीनी, कावूर, गैरीबॉल्डी एवम् नेपोलियन तृतीय की भूमिका। जर्मनी के एकीकरण का गतिक्रम (1815-1848), उदार राष्ट्रवादियों के प्रयत्न तथा जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका।

3. रूसी साम्राज्य (प्रायः 1860 से) : सुधारवादी प्रयास व दमन की नीति, 1905 की क्रान्ति तथा उसका उत्तरवर्त।

4. उस्मानी तुर्क साम्राज्य (प्रायः 1848 से) : ग्रीस के स्वतन्त्रता संग्राम (1821) से बर्लिन महासम्मेलन (1878) तक 'पूर्वी समस्या' के प्रमुख प्रसंग; बाल्कन क्षेत्र में उत्तर-1878 समस्याएँ तथा उसमानी तुर्क साम्राज्य पर उनके प्रभाव।

5. नव-साम्राज्यवाद का उद्भव तथा यूरोपीय देशों का उपनिवेशों के लिए प्रतिद्वन्द्व (1870 से); यूरोपीय प्रतिस्पर्धाएँ, सन्धियों की व्यवस्था तथा प्रथम विश्वयुद्ध का प्रारम्भ।

इकाई 3 : उद्योग एवं साम्राज्य के युग में यूरोपेतर विश्व (1919 तक)

1. संयुक्त राज्य अमेरिका (प्रायः 1860 से) : गृह-युद्ध की पृष्ठभूमि, आर्थिक प्रगति तथा विश्व शक्ति के रूप में उत्कर्ष।

2. चीन (प्रायः 1836 से) : आधुनिक राष्ट्रवाद का विकास; 1911 की क्रान्ति एवं उसका उत्तरावर्त।

3. जापान (प्रायः 1854 से) : तोकूगावा शोगुन-व्यवस्था का पतन व 'माइजी पुनर्स्थापन'; जापान का आधुनिकीकरण, क्षेत्रीय प्राधान्य व विश्वशक्ति के रूप में उत्कर्ष।

4. प्रथम विश्वयुद्ध के प्रमुख चरण; पेरिस की शान्ति व्यवस्था (1919)।

5. रूस की 1917 की क्रान्ति की पृष्ठभूमि; बोल्शेविक सत्ता की स्थापना एवम् सुदृढ़ीकरण (1924 तक); लेनिन की भूमिका तथा क्रान्ति का महत्व।

इकाई 4 : अन्तर्विश्वयुद्ध काल में विश्व (1914-1945)

1. इटली की फासीवदी सत्ता एवं जर्मनी की नात्सी सत्ता के विशेष सन्दर्भ में यूरोप में अधिनायकवादी राज्य व्यवस्थाओं के उद्भव के कारक।

2. राष्ट्रसंघ तथा अन्तर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा एवम् सहयोग हेतु उसके कार्य; महान अन्तर्राष्ट्रीय मंदी तथा विश्व व्यवस्था पर उसके प्रभाव।

3. संयुक्त राज्य अमेरिका में 'न्यू डील' की पृष्ठभूमि एवं प्रभाव।

4. कमाल अतातुर्क तथा तुर्की का आधुनिकीकरण।

5. चीन (प्रायः 1919 से) : कुओ-मिनतांग का उदय तथा उसकी नीतियाँ; कुओ-मिनतांग के साम्यवादी दल से संघर्ष के कारण एवम् उसका गतिक्रम (1949 तक)। जापान (प्रायः 1919 से); संविधानवाद का अवसान तथा सैनिक फासीवाद का उत्कर्ष; जापानी साम्राज्य का उत्थान एवम् पतन (1931-1945)।

इकाई 5 : नवीन विश्व व्यवस्था का आगमन (1939-1950)

1. अन्तर्राष्ट्रीय संकट के मुख्य कारक एवम् प्रसंग (1933 से); द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारम्भ के कारकों तथा युद्ध के प्रमुख चरणों की समीक्षा।

2. द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक उत्तरवर्त; शान्ति सन्धियाँ; संयुक्त राष्ट्र की स्थापना तथा उसके प्रारम्भिक कार्य।

3. शीत युद्ध का विकास तथा उसकी घटनाएँ (1945-1950); उपनिवेश-विग्रह (वि-उपनिवेशीकरण) तथा नवीन राष्ट्रों का उदय।

4. विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा उद्योग की प्रगति (1900 से); 1950 में विश्व की परिस्थितियों का सिंहावलोकन।

प्रश्नपत्र II(क)

मध्यकालीन भारत में प्रशासनिक संस्थाएं तथा सामाजिक एवं

आर्थिक जीवन, 1206-1740

(केवल मध्यकालीन इतिहास के विद्यार्थियों हेतु)

इकाई 1: मध्यकालीन भारत मे राजनैतिक सिद्धांत तथा संस्थायें

* राजत्व सिद्धांत: तुर्की एवं अफगान सुल्तानों के अंतर्गत विकास।

* मुग़ल राजत्व सिद्धांत: अबुल फ़ज़ल के विचार।

* केंद्रीय प्रशासन: दिल्ली के सुल्तानों एवं मुग़ल सम्राटों के अंतर्गत विकास।

* मराठा प्रशासन: शिवाजी के अंतर्गत विकास।

इकाई 2: मध्यकालीन भारत की भूमि व्यवस्था

* सल्तनतकालीन भूराजस्व व्यवस्था: अलाउद्दीन खल्जी एवं मुहम्मद बिन तुगलक का योगदान।

* सूरकालीन भूराजस्व व्यवस्था: शेरशाह का योगदान, जाब्ती व्यवस्था का विकास।

* मुग़लकालीन भूराजस्व व्यवस्था: अकबर का योगदान, जाब्ती व्यवस्था की सफलता, टोडरमल का बंदोबस्त, आईन-ए-दहसाला।

*मुग़लकालीन भारत में जमींदार एवं जागीरदार संवर्ग: शक्तियां तथा विशेषाधिकार, जमींदारी प्रथा में संकट।

इकाई 3: मध्यकालीन भारत में सैन्य संगठन

*सल्तनतकालीन सैन्य संगठन का विकास: बलबन एवं अलाउद्दीन खल्जी का योगदान।

* शेरशाह का सैन्य संगठन।

* मुग़लों के अंतर्गत सैन्य व्यवस्था: तुलुगमा व्यवस्था, युद्धों में आग्नेयास्त्रों का प्रभाव।

* मुग़लों के अंतर्गत मनसबदारी व्यवस्था: मनसबदारी व्यवस्था में परिवर्तन, मनसबदारी व्यवस्था के गुण व दोष।

इकाई 4: मध्यकालीन भारत मे व्यापार एवं उद्योग

* सल्तनतकाल में गैर-कृषीय उत्पादन: बड़े एवं कुटीर उद्योग।

* मुग़लकाल में गैर-कृषीय उत्पादन:बड़े एवं कुटीर उद्योग। क्या भारत सत्रहवीं सदी में विश्व का शीर्षस्थ औद्योगिक राष्ट्र था?

* सल्तनत एवं मुगलकाल में आंतरिक व्यापार।

* सल्तनत एवं मुगलकाल में विदेशी व्यापार: व्यापारिक मार्ग, आयात एवं निर्यात।

इकाई 5: मध्यकालीन भारत में सामाजिक जीवन

* सल्तनतकाल में उमरा: संरचना, जीवनशैली, राजनीति में भूमिका।

* मुगलकाल में उमरा: संरचना, जीवनशैली, राजनीति में भूमिका।

* मध्यकालीन भारत में उलमा: संरचना, शैक्षिक व सामाजिक भूमिका, राजनीतिक प्रभाव।

* मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की दशा: आभिजात्य वर्ग, सामान्य वर्ग।

प्रश्नपत्र ॥(ख)

आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, 1740-1950

(केवल आधुनिक इतिहास के विद्यार्थियों हेतु)

इकाई 1: प्रारम्भिक औपनिवेशिक काल में सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ(1813 तक)

* ब्रिटिश साम्राज्यवाद एवं सामाजिक नीति के चरण(1947 तक)

* आर्थिक परिस्थितियां- ग्रामीण समुदाय, कृषीय संरचना, व्यापार एवं वस्तु उत्पादन।

* (1765 से) ब्रिटिश आर्थिक नीतियाँ, बंगाल का स्थायी बंदोबस्त तथा उसके प्रभाव।

इकाई 2: उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन(1813-1860)

* नयी भू-व्यवस्थायें(रैयतवाड़ी एवं महालवाड़ी), भूराजस्व नीतियों के प्रभाव।

* विदेशी व्यापार एवं कृषि के बदलते स्वरूप;वि-औद्योगीकरण।

* सामाजिक धार्मिक आंदोलनों के उद्भव के कारक; राजा राममोहन राय एवं ब्रह्मसमाज; अन्य सुधार आंदोलन; इस्लामी अनुक्रिया।

* शैक्षिक नीति एवं विकास; सामाजिक विधायन।

इकाई 3: उत्तरवर्ती उन्नीसवीं एवं प्रारम्भिक बीसवीं शताब्दियों में औपनिवेशिक आर्थिक नीतियां एवं उनके प्रभाव(1860-1919)

*(रेल व्यवस्था के विशेष सन्दर्भ में) परिवहन एवं संचार का विकास; (1757 से) अर्थिक अपग्रहण एवं उसके प्रभाव; विदेशी पूंजी की भूमिका।

*विदेशी व्यापार का स्वरूप; प्रशुल्क नीति; अवरुद्ध आर्थिक विकास का प्रश्न।

इकाई 4: उत्तरवर्ती उन्नीसवीं एवं प्रारंभिक बीसवीं शताब्दियों में सामाजिक परिवर्तन एवं उसके परिणाम)(1860-1919)

* सामाजिक एवं धार्मिक सुधार की प्रवृत्तियां, क्षेत्रीय भाषाओं एवं साहित्य का विकास।

* मुस्लिमों एवं पिछड़े वर्गों के सामाजिक आंदोलन; संस्कृतीकरण।

* शैक्षिक विकास; (1939 तक) सामाजिक विधायन; महिलाओं की प्रस्थिति।

इकाई 5: सामाजिक एवं आर्थिक संक्रमण तथा साम्राज्यवाद का अवसान(1919-1950)

* (1939 तक) औद्योगिक नीति एवं विकास; विदेशी व्यापार तथा प्रशुल्क; विश्वव्यापी मंदी(1929-1933) का प्रभाव।

* कृषकों की परिस्थितियां एवं कृषक आन्दोलन; श्रमिक संघवाद(ट्रेड यूनियनिज्म) का विकास।

* गांधीवादी सामाजिक विचार एवं आन्दोलन; बाबा साहब आंबेडकर एवं दलित आन्दोलन; (1890 के दशक से) साम्प्रदायिक आगठन(mobilization) में सामाजिक-आर्थिक कारक।

प्रश्नपत्र III(क)

भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन (1857-1950)

(केवल मध्यकालीन इतिहास के विद्यार्थियों हेतु)

इकाई 1: भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि(1885 तक)

* ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद से तात्पर्य तथा राष्ट्रवाद के विभिन्न सिद्धांत, भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास-लेखन।

* 1857 का विद्रोह: दीर्घकालीन एवं तात्कालिक कारक तथा विद्रोह का गतिक्रम, विद्रोह का नेतृत्व, जन-प्रतिभाग तथा स्वरूप।

*विद्रोह का उत्तरवर्त(प्रायः 1900 तक): संवैधानिक एवं प्रशासनिक परिवर्तन तथा भारतीय रियासतों के प्रति नीति, ब्रिटिश सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों की प्रमुख विशेषतायें।

* नवीन धाराएं(1857-1914): मध्यवर्गों एवं नव अभिजनों का उदय, हिन्दुओं व मुसलमानों में धार्मिक व सामाजिक सुधार की प्रवृत्तियां तथा पिछड़े वर्गों के सामाजिक आन्दोलन।

इकाई 2: राष्ट्रीय अभ्युत्थान का उत्कर्ष(1885-1914)

* उदारवादी एवं युयुत्सु राष्ट्रवाद: नम्रवादियों(नरमपंथ) की विचारधारा एवं कार्यक्रम; युयुत्सु(militant)राष्ट्रवाद के विकास के कारक तथा चरमपंथियों(गरमपंथ) की विचारधारा एवं कार्यक्रम।

* साम्प्रदायिक विभाजन:(1890 के दशक से) सम्प्रदायवादी प्रवृत्तियां एवं विवाद, मुस्लिम लीग की स्थापना एवं कार्यक्रम।

* ब्रिटिश प्रत्युत्तर: बंगभंग एवं अन्य राष्ट्रवाद विरोधी उपाय, भारत परिषद अधिनियम 1909 के उद्देश्य एवं प्रावधान तथा उसकी राष्ट्रवादी प्रत्यालोचना।

* राष्ट्रवाद की प्रगति: स्वदेशी एवं बंगभंग-विरोधी आंदोलनों की पृष्ठभूमि एवं गतिक्रम, 'सूरत विग्रह' तथा राष्ट्रीय आंदोलन पर उसका प्रभाव, कृषक असंतोष तथा भारत में एवं उसके बाहर क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का विकास एवं विस्तार।

इकाई 3: राष्ट्रवाद का अग्रगमन (1914-1935)

* संवैधानिक परिवर्तन तथा तथा राष्ट्रवादी आगठन: भारत सरकार अधिनियम 1919 की पृष्ठभूमि एवं प्रावधान तथा उसकी राष्ट्रवादी प्रत्यालोचना, खिलाफत एवं असहयोग आंदोलनों की पृष्ठभूमि एवं गतिक्रम।

* असहयोग का उत्तरवर्त: स्वराज पार्टी तथा साम्प्रदायिक आगठन के कारक, गाँधी का रचनात्मक कार्यक्रम एवं सामाजिक आंदोलन।

* सविनय अवज्ञा का आगमन: साइमन आयोग के विरुद्ध अभियान, नेहरू रिपोर्ट एवं गोलमेज सम्मेलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन की पृष्ठभूमि एवं गतिक्रम तथा पूना सहमति।

* नवीन प्रवृत्तियां (1919 से): कृषक व श्रमिक आंदोलनों एवं 'वाम' का विकास तथा उनकी भूमिका, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का पुनरुत्थान तथा राष्ट्रीय आंदोलन में उसका स्थान।

इकाई 4: साम्राज्य का प्रतिगमन (1935-1947)

* नया संवैधानिक विन्यास: भारत सरकार अधिनियम 1935 के प्रावधान, उसकी राष्ट्रवादी प्रत्यालोचना तथा उसके कार्यसंचालन की समीक्षा, रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति की विशेषताएं एवं उसके उद्देश्य (1919-1947)।

* राजनीतिक विसम्मति: मुस्लिम लीग की नीतियां एवं गतिविधियां (1928-1945); (1932 से) ब्रिटिश नीतियों एवं कांग्रेस कार्यक्रम के प्रति डॉ. अम्बेडकर एवं साम्यवादी दल के दृष्टिकोण।

* द्वितीय विश्वयुद्ध की अवधि में राष्ट्रीय प्रयत्न (1942-1945): 'भारत छोड़ो' आंदोलन की पृष्ठभूमि, गतिक्रम एवं निष्पत्ति, आज़ाद हिंद फौज का उद्भव, गतिविधियाँ एवं भूमिका।

* सत्ता-हस्तांतरण का पदार्पण: शिमला सम्मेलन, कांग्रेस-लीग मतभेद, कैबिनेट मिशन योजना तथा अंतरिम सरकार का गठन, ब्रिटिश शासन विरोधी आंदोलन, साम्प्रदायिक उपद्रव तथा भारत से प्रस्थान के ब्रिटिश निर्णय के कारक।

इकाई 5: स्वाधीनता तथा स्वातंत्र्योत्तर प्रसंग (1947-1950)

* स्वाधीनता का आगमन: माउण्टबेटन योजना तथा स्वतंत्रता की सहवर्ती परिस्थितियां, भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन के उत्तरदायी कारकों का विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण।

* प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण तथा संवैधानिक विकास: रियासतों का समायोजन, संविधान सभा का कृतित्व तथा 1950 के संविधान की प्रमुख विशेषताएं।

* सामाजिक सन्दर्भ: दलितों एवं अन्य पिछड़े वर्गों तथा महिलाओं के विशेष सन्दर्भ में सामाजिक परिस्थितियों की समीक्षा (प्रायः 1900-1947), सरकार की सामाजिक नीति।

* पुनरावलोकन: स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्श एवं मूल्य, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद एवं डॉ. अम्बेडकर के योगदान।

प्रश्नपत्र III(ख)

मध्यकालीन भारत, 1526-1740

(यह प्रश्नपत्र केवल आधुनिक इतिहास के विद्यार्थियों के लिए है।)

इकाई 1 : मुगल साम्राज्य की स्थापना

1. बाबर के आक्रमण के समय भारत की दशा।

2. पानीपत, खानवा एवं घाघरा के युद्ध तथा बाबर की सैनिक उपलिब्धयाँ।

3. प्रशासक के रूप में बाबर; भारत में उसकी विजय का महत्व एवं बाबर का योगदान।

4. हुमायूँ - प्रारम्भिक कठिनाइयाँ; बहादुरशाह तथा शेरशाह से उसके सम्बन्ध; भारत से निष्कासन एवं साम्राज्य की पुनर्प्राप्ति।

इकाई 2 : सूर अन्तराल तथा अकबर का युग

1. शेरशाह : सत्तारोहण, प्रशासनिक सुधार; सूर राज्य का पतन।

2. पानीपत का द्वितीय युद्ध, 1556 से 1562 तक दरबारी राजनीति।

3. अकबर से अधीन मुगल साम्राज्य का विस्तार : उत्तरी भारत, दकन।

4. अकबर की धार्मिक एवं राजपूत नीतियाँ।

5. अकबर के प्रशासनिक सुधार, उसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन, क्या वह मुगल साम्राज्य का वास्तविक निर्माता था?

इकाई 3 : मुगल साम्राज्य का वैभव काल (1605-1658)

1. जहाँगीर के अन्तर्गत मुगल साम्राज्य की राजनीति।

2. राजपूतों के साथ जहाँगीर के सम्बन्ध।

3. फारस के सफवी, मध्य एशिया के उजबेक एवं उसमानी तुर्क साम्राज्य के साथ शाहजहाँ के सम्बन्ध।

4. उत्तराधिकार का युद्ध - इसके कारण एवं घटनाएँ।

इकाई 4 मुगल साम्राज्य - चरमोत्कर्ष तथा संकट

1. औरंगजेब - राजपूत एवं धार्मिक नीतियाँ।

2. औरंगजेब - दक्षिण नीति एवं मराठों के साथ सम्बन्ध।

3. क्षेत्रीयता बनाम साम्राज्यवाद : औरंगजेब और जाट, सतनामी, बुन्देले।

4. मुगल साम्राज्य का पतन एवं औरंगजेब का उत्तरदायित्व।

इकाई 5 : मुगल काल का पुनरावलोकन

1. मुगलों के अन्तर्गत सांस्कृतिक विकास का विहंगम वृत्त।

2. मुगल उमरा वर्ग की संरचना एवं भूमिका।

3. मुगल प्रशासन - केन्द्रीय, प्रान्तीय, मनसबदारी प्रथा।

4. व्यापार एवं वाणिज्य - यूरोपीय वाणिज्यिक गतिविधियाँ।